Knowledgeable Research (KR) 2026, Special Vol., (5):01
ISSN: 2583-6633, CODEN: KRABAU
International open-access peer-reviewed refereed monthly journal
https://knowledgeableresearch.com/index.php/1

साहित्य की रचनात्मकता पर कृत्रिम मेधा (AI) का प्रभाव

डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे*
सहायक प्राध्यापक,हिंदी विभाग,
पानसरे महाविद्यालय, अर्जापूर

शोध सार

वर्तमान समय डिजिटल युग से प्रभावित है जाहिर है कि इस समय में डिजिटाइजेशन का प्रयोग अत्यधिक रूप में किया जा रहा है। कागज़ी रेकॉर्ड, नक़द लेन-देन हो अथवा कार्यालयों में दस्तावेज़ रखने की प्रक्रिया सभी का डिजिटाइजेशन वर्तमान समय की मांग है। इस प्रणाली में कृत्रिम मेधा अर्थात AI का अत्यधिक रूप में प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान डिजिटल युग में कृत्रिम मेधा मानव जीवन के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी न केवल निर्णायक भूमिका निभा रहा है अपितु कृत्रिम मेधा ने साहित्य के रचनात्मक क्षेत्र में भी हस्तक्षेप किया है जिसे तत्कालीन शोध नें स्पष्ट किया है। साहित्य को जहां अनुभव, मानवीय संवेदना और कल्पनाशीलता का क्षेत्र माना जाता रहा है वही साहित्य आज के समय में कृत्रिम मेधा के प्रभाव से नई संभावनाओं के साथ कई चुनौतियों का सामना भी कर रहा है। कृत्रिम मेधा AI के प्रभाव से साहित्य पर कुछ सकारात्मक तो कुछ नकारात्मक प्रभाव भी परिलक्षित होता दिखाई देता है। विवेच्य शोध-पत्र में साहित्य की रचनात्मकता पर कृत्रिम मेघा के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है।

बीज शब्द: रचनात्मकता, कृत्रिम मेधा, कंप्यूटर, टूल्स, जेनरेटिव, सकारात्मक, नकारात्मक, संवेदना, अनुवाद, विकल्प।

Received: 03/12/2025
Accepted: 17/01/2026
Published: 31/01/2026

***Corresponding Author:**
डॉ. प्रकाश भगवानराव शिंदे
Email: drshindepb@gmail.com

प्रस्तावना:

साहित्य समाज की संवेदनाओं को व्यक्त करने का सशक्त माध्यम है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल की युगीन परिस्थितियों को रचनाकारों ने स्वीकार कर साहित्य के क्षेत्र में हो रहे बदलाव को अपने लेखनी के माध्यम से स्पष्ट किया है। इतना ही नहीं तो समयानुकूल निरंतर हो रहे परिवर्तन और नवाचार के अनुकूल अपनी संवेदना और शिल्प को बदला है। वर्तमान समय डिजिटल तथा कृत्रिम मेधा AI का होने के कारण 21वीं सदी के साहित्यकारों के सामने कृत्रिम मेधा एक नई तकनीकी शक्ति के रूप में सामने आ रही है जो न केवल डिजिटाइजेशन करता है अपितु साहित्य की सृजन-प्रक्रिया या रचनात्मकता को भी प्रभावित करता है।

वर्तमान समय में कृत्रिम मेधा AI ने प्रत्येक क्षेत्र में गति प्रदान की है जिसके लिए अत्याधुनिक तकनीकी सेवा का प्रयोग किया जा रहा है, स्पष्ट है इस गतिशील प्रक्रिया में कृत्रिम मेधा AI का स्थान सर्वोपरि है। आज व्यापार, उद्योग, शिक्षा, आरोग्य, कृषि के साथ-साथ साहित्य के क्षेत्र में भी गतिशीलता एवं नवाचार को प्राथमिकता दी जा रही है। साहित्य की यह गतिशीलता एवं नवाचार कृत्रिम मेधा AI से प्रभावित हो रहा है। कृत्रिम मेधा विज्ञान की वह शाखा है जिसमें मशीनों को इस प्रकार विकसित किया जाता है कि वह मनुष्य जैसी सोच और गति तथा विश्लेषण और निर्णय लेने की क्षमता को विकसित कर सकें।

मूल आलेख:

AI (कृत्रिम मेधा) का विस्तृत रूप है- Artificial Intelligence. कृत्रिम मेधा एक क्रांतिकारी तकनीक है जो मनुष्य की तरह मशीनों को समस्या का समाधान करने में सक्षम बनाती है, अर्थात कृत्रिम मेधा का आशय उस प्रणाली से है जिसमें मशीनों के कृत्रिम ज्ञान का विकास और इसी कृत्रिम संज्ञानात्मक क्षमता के आधार पर उनमें संदर्भगत निर्णय लेने की क्षमता का विकास करने की प्रक्रिया है- जैसे बिना चालक के कार का संचालन। स्पष्ट है, कृत्रिम मेधा के माध्यम से मशीनों और कंप्यूटर सिस्टम्स को मानव की तरह सोचने-समझने और निर्णय लेने की क्षमता दी जाती है। इसे और अधिक सरल शब्दों में कहें तो कृत्रिम मेधा AI मशीनों को स्मार्ट बनाने की कला है ताकि वह इंसानों की तरह काम कर

सके। सभी जटिल कार्य को स्वयंचलित रूप में कर सके यह तकनीक आज हमारे स्मार्टफोन, गाड़ी और यहां तक की घरेलू उपकरणों में भी मौजूद है। AI मशीनों को न केवल स्मार्ट बनाती है बल्कि उसे चतुर भी बनाती है। जैसे आप एक प्रश्न पूछेंगे तो आपको उसी के अनुरूप AI कई प्रश्नों के उत्तर दे सकता हूं की अनुमति देता है यह कृत्रिम मेधा की गतिशीलता है।

21वीं सदी में कृत्रिम मेधा हम सभी की आवश्यकता बन गया है जिसका आविष्कार करने का श्रेय एलन ट्यूरिंग को जाता है जिन्होंने 1950 में अपने शोध पत्र "कंप्यूटिंग मशीनरी एंड इंटेलिजेंस" की अवधारणा प्रस्तुत की है। उन्होंने मशीनों द्वारा मनुष्य की तरह सोचने की संभावना का पता लगाया। ट्युरिंग ने सैद्धांतिक आधार को तैयार कर दिया लेकिन आज हम जिस कृत्रिम मेधा AI को जानते हैं वह दशकों पहले विभिन्न क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ाने वाले वैज्ञानिकों और इंजीनियरिंग के सामूहिक प्रयासों के नवाचार का परिणाम है। वैसे देखा जाए तो कृत्रिम मेधा का प्रयोग 1980 के दशक में अत्यधिक रूप में किया गया है। उससे आगे जाकर देखेंगे तो 2020 में आयोजित "सामाजिक अधिकारिता हेतु जिम्मेदार कृत्रिम मेधा" शीर्षक से पांच दिवसीय वैश्विक सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में प्रधानमंत्री ने इसे भारतीय संदर्भों के अनुरूप विकास और भारतीय भाषिक तथा सामाजिक विविधता के अनुरूप इसको उपयोगी बनाने का आवाहन किया। इस वैश्विक सम्मेलन में देश-विदेश के वैज्ञानिकों के साथ पूंजीपतियों की भी सहभागिता थी। AI ने समाज के हर क्षेत्र को प्रभावित किया जिससे भाषा और साहित्य भी प्रभावित होता दिखाई देता हैं।

साहित्य के रचनात्मकता या सृजन की परंपरा काफी प्राचीन रही है। हिंदी साहित्य की दृष्टि से यदि विचार करें तो आदिकाल से वर्तमानकालीन साहित्य सृजन ने समाज में स्थित विभिन्न परिस्थितियों, वर्तमानकालीन समस्याओं एवं भविष्य का ज्ञान करनेवाला साहित्य रहा है। जैसे कि पहले ही स्पष्ट किया है समाज का कोई भी क्षेत्र अब AI कृत्रिम मेधा से बिना प्रभावित हुए नहीं रहा जिससे हिंदी साहित्य एवं भाषा भी प्रभावित हो रही है। आज मशीन लर्निंग के माध्यम से कविताएं लिखी जा रही हैं। यह काम 'चाट जीपीटी', 'जेनरेटिव' और AI टूल्स के माध्यम से संभव है। AI टूल्स कविता, कहानी और निबंध लेखन में, नए विषयों और शैलियों के सृजन में अपनी अहम् भूमिका निभा रहा है। कविता, कहानी, निबंध के साथ-साथ अनुवाद और संपादन कार्य में भी कई लेखक कृत्रिम मेधा की सहायता ले रहे हैं, जिससे विषय विस्तार, शैली की नवीनता, समृद्ध शब्दावली, वर्तनी का सुधार, साहित्य के रचनात्मकता में नवाचार लाने के लिए नव-लेखक को कृत्रिम मेधा उपयोगी हो रहा है।

AI आधारित 'अनुवाद टूल्स' आज के समय की सर्वाधिक मांग रही है। किसी भी भाषा की कृति का अनुवाद पलक झपकते ही कृत्रिम मेधा जिस भाषा में चाहिए कर देता है। अनुवाद का क्षेत्र सबसे कठिन एवं जटिल क्षेत्र माना जाता है किंतु कृत्रिम मेधा ने इसे सबसे आसान बना दिया है। AI प्रणाली गहन भाव, शैली और संरचना के विश्लेषण को विस्तृत रूप देने में सक्षम है। कृत्रिम मेधा के टूल्स न केवल लिखित रूप में सामग्री का संकलन प्रस्तुत करते हैं बल्कि पाठक को साहित्य जिस किसी भी रूप में चाहिए जैसे- पीडीएफ, ऑडियो, पावर पॉइंट, आदि में भी परिवर्तित कर देने की क्षमता रखता है। ChatGPT के द्वारा लेखक किसी भी विषय पर कविता, कहानी और अनुवाद कार्य आसानी से कर सकते हैं जिसका उदाहरण 'डिजिटल युग की उदासी' नमक कविता है। एक आभासी मित्र जिसने इंसानी भावनाओं को समझना शुरू कर दिया जैसी लघुकथाएं कृत्रिम मेधा के ही उदाहरण है।

कृत्रिम मेधा के माध्यम से नव-लेखकों का काम भले ही आसान हुआ हो किंतु AI के नकारात्मक प्रभाव की भी यहां चर्चा करना आवश्यक है। कृत्रिम मेधा के द्वारा साहित्य की रचनात्मकता हो सकती है, हो रही है किंतु प्रेमचंद, निराला, महादेवी वर्मा, जयशंकर प्रसाद, दुष्यंत कुमार, मोहन राकेश, ममता कालिया के भाव आपको कृत्रिम मेधा की सहायता से बनाई गई रचना नहीं दे सकती। इन रचनाकारों ने तत्कालीन समय को अपनी आंखों से देखा है, उसे स्वयं अनुभव किया है और उसी अनुभूति को साहित्य की रचनात्मकता का विषय बनाया है। इन लेखकों की रचनात्मकता के भाव, भविष्य के संकेत तथा मानवीय संवेदना आपको कृत्रिम मेधा द्वारा बनाई गई रचना में नहीं मिलेगी। AI द्वारा लिखा साहित्य लेखक पर प्रश्न चिन्ह बना रहता है। यदि मशीन कविता लिखें, कहानी लिखें तो कवि या कहानीकार किसे कहना चाहिए? किसी व्यक्ति को या मशीन को यह प्रश्न उपस्थित होता है। कृत्रिम मेधा द्वारा लिखा गया साहित्य पुनरावृति से भरा रहेगा क्योंकि उसमें अलग-अलग व्यक्तियों की भावना नहीं तो मशीनी संवाद रहेंगे और मशीनी संवाद में नवीनता नहीं तो पुनरावृत्ति अधिक रहती हैं।

कृत्रिम मेधा द्वारा लिखा गया साहित्य संवेदनहीन होगा। जहां संवेदना नहीं वहां न पीड़ा होगी और ना ही संघर्ष होगा। हिंदी साहित्य के वर्तमान विमर्शों पर यदि बात करें तो वहां कसक, पीड़ा, टीस कृत्रिम मेधा द्वारा लिखा गया साहित्य नहीं दे सकता क्योंकि स्त्रीवादी साहित्य, दलित साहित्य, आदिवासी साहित्य, वृद्ध विमर्श और कृषक का दर्द जैसे विषयों मे स्वानुभूति और मानवीय संवेदना की आवश्यकता है न कि सहानुभूति की। यहां कृत्रिम मेधा मानवीय संवेदना कैसे देगा यह प्रश्न भी

सोचनीय है।

कृत्रिम मेधा भाषा की संवेदनशीलता को भी अभिव्यक्त नहीं कर पाएगा क्योंकि हिंदी भाषा की सांस्कृतिक बारीकियां और भाव गहनता को कृत्रिम मेधा पूरी साक्षमता के साथ पकड़ नहीं पाएगा। अस्तु कृत्रिम मेधा साहित्य का उपकरण हो सकता है विकल्प नहीं।

सारांश:

कृत्रिम मेधा हिंदी साहित्य रचनात्मकता के लिए न तो पूरी तरह से खतरा है और नहीं पूरी तरह का समाधान बल्कि वह साहित्य के रचनात्मकता का उपकरण है। कृत्रिम मेधा की भूमिका साहित्य सृजन के लिए बहुआयामी और परिवर्तनकारी सिद्ध हो रही है। रचनात्मक लेखन, अनुवाद, आलोचना, कविता कहानी जैसे क्षेत्रों में कृत्रिम मेधा AI ने नए अवसर उपलब्ध कराए हैं वही साहित्य में भाव, मानवीय संवेदना और भविष्य के संकेत महत्वपूर्ण होते हैं जिसकी पूर्ति कृत्रिम मेधा नहीं कर सकता। बावजूद इसके कृत्रिम मेधा साहित्य सृजन में नयी ऊंचाईयां निर्माण कर सकता है उसके लिए आवश्यकता है अपनी मौलिक रचनात्मकता को पूरी तरह समाप्त किए बिना केवल कृत्रिम मेधा का प्रयोग बशर्त, विवेकपूर्ण करें तो कृत्रिम मेधा लेखक के लिए प्रतिस्पर्धा न होकर सहयोगी सिद्ध हो सकता है।

संदर्भ सूची:

1.हिंदी साहित्य का नया परिदृश्य, रामदरश मिश्र, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2005.

2.डिजिटल युग में हिंदी साहित्य, अंजली गुप्ता, वाणी प्रकाशन, मुंबई.

3.Jansatta.com अरिमदिन कुमारी त्रिपाठी, 18 October 2020

4.Techtarget.com कृत्रिम बुद्धिमत्ता

5.https://aksharasurya.com

Copyright: © The authors. This article is open access and licensed under the terms of the Creative Commons Attribution License (CC BY)